वी.सी.डी. नं.-76, इंद्रप्रस्थ (राजमंड्री पार्टी)

व्याख्या ता.05.06.03

सर्चलाइट से विश्व-कल्याण

आज है 22/5/65 का प्रातःक्लास। रिकॉर्ड चला है-रात के राही थक मत जाना, सुबह की मंज़िल दूर नहीं है। मीठे-2 बच्चों ने गीत सुना। कैसे बच्चों ने गीत सुना? मीठे-2 बच्चों ने और कड़वे-2 बच्चों ने गीत नहीं सुना? (किसी ने कहा- नहीं सुना) क्यों? गीत तो कोई भी सुन सकता है! एक होता है सुनना, दूसरा होता है समझना। अगर सुनने के बाद समझा नहीं और समझने के बाद फिर फॉलो नहीं किया, प्रैक्टिकल जीवन में, तो कोई फायदा नहीं। बाप की दृष्टि में मीठे बच्चे वो हैं जो सुनते भी हैं, समझते भी हैं, प्रैक्टिकल जीवन में फॉलो भी करते हैं, इसलिए मीठे हैं। उन्होंने क्या गीत सुना? रात के राही थक मत जाना। यह रात कौन-सी है? (द्वैतवादी) द्वापर और (पापी) कलियुग रूपी अंधेरा है। इस अंधेरे में सब मनुष्यात्माएँ 63 जन्मों से भटक रही हैं, किसी को रास्ता नहीं मिल रहा है। तो बाप ने यह गीत लगवाया कि हे रात के राही, तुम थक मत जाना। तुम्हारी तो यात्रा है ना, अगर थक गए तो मंज़िल पर नहीं पहुँचेंगे। मंज़िल पर (तब) पहुँचेंगे जब अथक होकर चलेंगे और यह समझेंगे कि अब हमें मंज़िल मिली कि मिली माने अंदर में उमंग-उत्साह चालू बना रहे। तो ऐसा गीत मीठे-2 बच्चों ने सुना और उनका अर्थ भी जाना। किसने जाना? मीठे-2 बच्चों ने, आत्मा रूपी बच्चों ने जाना। जो देह-अभिमानी हैं उन्होंने इसके अर्थ को नहीं जाना।

बाबा बार-2 समझाते हैं कि बच्चे, आत्म-अभिमानी बनो। बाप की बातों को समझने के लिए क्या बनो? आत्मा-अभिमानी बनो और परमपिता-परमात्मा से बुद्धियोग लगाओ। यह शर्त है। परमात्मा की याद कब आएगी? जब पहले अपने से देहभान निकालें। 'मैं देह हूँ'-इस स्मृति से परे होकर, 'मैं ज्योतिबिंदु आत्मा हूँ'-इस स्मृति में टिकें, तो परमपिता-परमात्मा से बुद्धियोग लगेगा। जितना बाप के बच्चे बनेंगे, बाप भी मददगार बनेंगे। रावण के बच्चे देह-अभिमानी बनेंगे तो रावण मददगार बनेगा और राम के बच्चे बनेंगे तो राम मददगार बनेगा। रावण का चित्र कैसा दिखाया जाता है और राम का चित्र कितना बड़ा दिखाया जाता है! बड़ा किसका दिखाया जाता है? रावण का चित्र बड़ा दिखाया जाता है। तो कोई इतना बड़ा होता नहीं है। इतना बड़ा क्यों दिखाया जाता है? ज़्यादा देहभान भरा हुआ है उसकी यादगार में रावण का चित्र बड़ा बनाया जाता है और राम का चित्र छोटा बनाया जाता है। वह भी चरित्र की यादगार है। छोटा माना आत्मिक स्थिति वाला;

कोई देहभान, कोई देह-अहंकार, कोई मान-मर्तबा नहीं; आत्माभिमानी स्टेज। तो जितना आत्मिक स्थिति में स्थित होने वाले बाप के बच्चे बनेंगे उतना बाप के मददगार बन सकेंगे। अगर आत्माभिमानी नहीं बनेंगे तो बिन्दु-2 आत्माओं का जो बाप है परमपिता-परमात्मा शिव, उसके मददगार नहीं बन सकेंगे।

जितना बाप को याद करेंगे उतनी मदद मिलेगी; क्योंकि तुम बच्चों ने बाप को जाना है। मदद किनको मिलेगी? जिन्होंने बिदु-2 आत्माओं के बाप सुप्रीम सोल परमात्मा बाप को पहचाना है, उनको ही मदद मिलेगी। दुनियाँ में कोई मनुष्य ऐसा नहीं है जो बाप को जानता हो। कौन-सी दुनियाँ में? 500/700 करोड़ की जो भी दुनियाँ है उसमें कोई मनुष्य ऐसा नहीं जो बाप को जानता हो और बाप से (पूरी) मदद ले सकता हो सिवाय तुम्हारे। तुम बहुत मदद ले सकते हो और फिर औरों को मदद भी कर सकते हो। अभी भी कर सकते हो और जब इस सृष्टि पर (महा) विनाश बरपा होगा, दुनियाँ की खस्ता हालत होने लगेगी, उस समय भी तुम बाप के बहुत मददगार बन सकते हो और दूसरी आत्माओं को भी मदद दे सकते हो। जैसे बाबा ने समझाया है तुम्हारी प्यारी-ते-प्यारी माँ है, कुछ तकलीफ है; क्योंकि कर्मभोग तो सभी को होता है। तो माँ है अथवा कोई अनपढ़ बच्चा है तो उनको हम क्या मदद दे सकते हैं? बाप भी बहुत मदद दे सकते हैं; परंतु देंगे उसको जो बाप के बच्चे हैं। कौन-से बाप के? सुप्रीम सोल बाप के आत्मिक रूप वाले बच्चे हैं, आत्मिक स्थिति में टिकने वाले बच्चे हैं; देहभान में रहने वाले बच्चे नहीं हैं।

जैसे मम्मा है, बाबा की बच्ची भी है और तुम्हारी माँ है। किस समय की वाणी है? 65 की। मम्मा उस समय जीवित थी, ओमराधे सरस्वती जीवित थी। उस समय उनको बीमारी थी, (गला-) कैंसर की बीमारी हुई थी। तो बताया-जैसे मम्मा है, बाबा की बच्ची भी है और तुम्हारी माँ भी है और बहन भी है। कैसे? प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे तुम भी हो और प्रजापिता ब्रह्मा की बच्ची वो भी है तो तुम्हारी बहन भी है। तो अब उनको कैसे मदद दें? उस समय मम्मा हॉस्पिटल में पड़ी हुई थी, इलाज हो रहा था। तो मम्मा को कैसे मदद करें? बाबा को याद करना है। कोई भी आत्मा को मदद देने का सबसे बड़ा, सबसे अच्छा तरीका क्या बताया? बाबा को याद करना है। एक/दो को मदद दे कल्याण करना है। सवेरे उठ बाबा को याद करना चाहिए। किसी आत्मा को मदद देने का सबसे अच्छा टाइम कौन-सा है? अमृतवेला। सिर्फ मम्मा के लिए नहीं; कोई के लिए भी बाप से कैसे मदद ले सकते हो, वह युक्ति बाबा बताते ही रहते हैं। सबसे अच्छी युक्ति क्या बताई? अमृतवेले

जब शिव बाप की याद में बैठो तो उस समय उस आत्मा को भी याद करना है जिसको मदद देनी है-पहले तो उसका चेहरा याद आएगा। आत्मा भी याद करनी है-और आत्मा को याद करके परमपिता-परमात्मा शिव के साथ उसे सर्चलाइट देनी है। जैसे टॉर्च में से रोशनी निकलती है, ऐसे टॉर्च के मुआफिक बाप के साथ बैठकर किसी भी आत्मा को सर्चलाइट देनी है। ऐसे किसी भी आत्मा को मदद दे सकते हो।

बाप को याद करना यह (खास) तेरे लिए, सारे भारत के लिए और सारे विश्व के लिए कल्याणकारी है। किस-2 के लिए बताया? बाप को याद करना, किसके लिए? तेरे लिए। तेरे किसको कहा जाता है? (किसी ने कुछ कहा) ना, सन्मुख तो होता है; लेकिन तेरे कहा जाता है एक के लिए। अंग्रेज़ी में कहते हैं- दाउ, तू या तेरा। बाप को याद करना यह तेरे लिए माना कोई एक पर्टिक्युलर आत्मा की तरफ शिवबाबा की नज़र जा रही है। तेरे लिए, सारे भारत के लिए और सारे विश्व के लिए कल्याणकारी है। क्या? याद करना। अच्छा, यह 'तेरे लिए' किसके लिए बोला? तेरे लिए, सारे भारत के लिए और सारे विश्व के लिए कल्याणकारी है। ऐसी किसकी याद है? जिस एक पर्टिक्युलर के लिए बाबा बोल रहे हैं कि सारे विश्व के लिए तेरी याद कल्याणकारी है। बाबा बच्चों को इमर्ज करके भी बोलते हैं। भले सन् 65 में वह बच्चा साकार रूप में बाबा के सामने नहीं था, फिर भी बाबा उस बच्चे को अपने सन्मुख इमर्ज करके बोल रहे थे कि बाप को याद करना यह तेरे लिए, सारे भारत के लिए और सारे विश्व के लिए कल्याणकारी है। इस, 'तेरी' बाप की यादगार (प्राय: शंकर के) चित्रों में आज तक भी (याद में बैठा) दिखाते चले आ रहे हैं।

कौन-सा (ऐसा एक) देवता है जिसकी याद की स्थिति चित्रों में (प्राय:) दिखाई जाती है? (महादेव) शंकर। शंकर को याद में, ध्यानमग्न स्टेज में बैठा हुआ दिखाया जाता है, उस बच्चे के लिए शिव बाप बोले। (खास) तीन बच्चे हैं ना- ब्रह्मा, विष्णु, शंकर; देव-देव-महादेव। तो महादेव शंकर बच्चे के लिए शिव बाप ने ब्रह्मा के तन से बोला कि शिव बाप को याद करना यह तेरे लिए खास और फिर आम सारे भारत के लिए और सारे विश्व के लिए कल्याणकारी है। तेरी याद में (यानी) तू याद में जो बैठता है, वह इतनी तीखी याद है कि उस याद से सारे ही विश्व का कल्याण होना है। बाप फिर भी तुम बच्चों द्वारा मदद लेते हैं कि याद में रहो। क्या मदद लेते हैं और कौन मदद लेते हैं? बिंदु-2 आत्माओं का जो बाप है, सुप्रीम सोल ज्योतिबिंदु शिव बाप, वह हम बच्चों से क्या मदद लेते हैं? वायब्रेशन की, एकाग्रता की मदद लेते हैं। ज्योतिबिंदु शिव बाप कहते हैं कि

जब तक सारी दुनियाँ का वायब्रेशन एकाग्र नहीं बनेगा तब तक दुनिया में कोई (महान) कार्य सम्पन्न नहीं हो पाएगा, नई दुनियाँ का वायब्रेशन नहीं बन सकता। इसलिए तुम बच्चों को ऐसी स्थिति में, ऐसी याद की स्टेज में बैठना है कि जो दुनियाँ का वायब्रेशन बँधकर एक हो जाए, किसी के अंदर कोई दूसरा संकल्प न रहे, जो बाप का संकल्प सो बच्चों का संकल्प, माना बाप के संकल्प में बच्चों का संकल्प मर्ज़ हो जाए। जिसको दुनियाँ वालों ने कह दिया है, सागर में समा गया। बुदबुदे सागर में समा गए, माना आत्मा रूपी बुदबुदे, जो अपने-2 अंदर अलग-2 संकल्प धारण किए बैठे हैं, अपने-2 अलग-2 प्लैन बना रहे हैं, अलग-2 योजनाएँ चला रहे हैं, कोई दुष्ट संकल्प चला रहे हैं, कोई मीडियम अच्छे संकल्प, कोई बहुत अच्छे संकल्प चला रहे हैं; लेकिन ये संकल्प-विकल्पों की जो वायब्रेशन की लड़ियाँ हैं, वो सब मिल करके एक सुप्रीम सोल बाप के अंदर समाय जाएँ। संगठित रूप में आत्माओं की ऐसी स्टेज बन जाएगी तो सारे विश्व का कल्याण हो जाएगा। तो सुप्रीम सोल बाप आकर हम बच्चों से इस बात की मदद लेते हैं।

बाप की याद ही सर्व के लिए कल्याणकारी है। जो भी तुम्हारे मित्र+सम्बंधी आदि हैं उनका तुम कल्याण कर सकते हो। ऐसी बाप की याद में बैठकर, कैसी याद में? ऐसी निःसंकल्पी याद में बैठकर तुम कोई का भी कल्याण कर सकते हो। तुम्हारे कोई भी मित्र-सम्बंधी क्यों न हों, उनका भी तुम कल्याण कर सकते हो। सवेरे उठकर बाप को याद करना चाहिए। दिन में तो कर्म करना होता है। शरीर है, कर्मेंद्रियाँ हैं, तो कर्मेंद्रियों के पोषण के लिए, शरीर के, पेट के पोषण के लिए किसी के अधीन भी नहीं बनना है। कमाई करनी है। शरीर की भी कमाई करनी है और शरीर में जो मन-बुद्धि रूपी आत्मा है, उसका भी पोषण करने के लिए सवेरे-2 का टाइम निकालो बाप को याद करने का। अमृतवेले ही तुम अच्छी रीति बाप को याद कर सकते हो। सवेरे उठने का नियम रख दो कि हमको 2 बजे, 3 बजे या 4 बजे उठना ज़रूर है और बाप की याद में बैठना है। जितना समय तुम बाप को याद करते हो वो रजिस्टर होता जाता है। बाप के पास रजिस्टर है। तुम जितना बाप की याद में बैठते हो उतनी वो याद तुम्हारी बाप के रजिस्टर में नूँध होती जाती है अर्थात् बाप के पास ऊपर नूँध होता जाता है। बाप को तो बहुत याद करना चाहिए। प्यारी चीज़ को बहुत याद किया जाता है।

अपने दिल अंदर बाबा को याद किया जाता है। बाबा, हम जानते हैं कि कर्मभोग तो सबको भोगना ही है। फिर भी जैसे आशीर्वाद ली जाती है- बाबा, हमारी मम्मा को ठीक कर दो। जैसे समझो,

नेहरु था। तो भगवान से आशीर्वाद लेते थे इनकी आयु को बड़ा करो। दुनियावी जवाहर लाल नेहरु का मिसाल दिया कि भगवान से आशीर्वाद लेते थे कि इनकी आयु को बड़ा करो। इनकी भारत में बहुत दरकार है। किनकी? नेहरु जी की। भारतवर्ष के लोग क्या समझते थे? कि नेहरु जी की भारत में बहुत दरकार है; परंतु उन्हों की पुकार तो बाप सुनेगा नहीं। किन्हों की? जिस समय गाँधी जी ने 'पतित-पावन सीता-राम' की आवाज़ लगाई उस समय वो पुकार परमात्मा नहीं सुनता था। क्यों? ऐसी पुकार तो 2500 साल से भक्तों के द्वारा होती ही आई; लेकिन (परमपिता) परमात्मा बाप को तो अपने टाइम पर ही आना होता है। तो उन्हों की पुकार तो बाप सुनेगा नहीं; क्योंकि बाप को तो वो जानते ही नहीं। पुकार किनकी सुनेगा? जो बाप को जानते हों। तो तुम बच्चे जिनको पूरा निश्चय है। किस बात का? कि वो बिंदु-2 आत्माओं का बाप सुप्रीम सोल इस सृष्टि पर आया हुआ है। जिनको पूरा निश्चय है, तो तुम्हारी तो सुनेंगे; क्योंकि तुम उनकी श्रीमत पर चलते हो। क्यों सुनेंगे? क्योंकि तुम उनकी श्रीमत पर चलते हो। लौकिक में भी कोई बाप के बच्चे होते हैं, कोई बाप की बात मानते हैं, कोई नहीं मानते हैं। तो जो बच्चे बाप की बात को मानते हैं, बहुत महत्व देते हैं तो बाप भी उनकी बात बहुत ध्यान से सुनते हैं, ध्यान देते हैं। तो तुम्हारी बात सुनेंगे।

बाप कहते हैं- बच्चे, रात को जागकर मुझे याद करो तो इसमें तुम्हारा भी कल्याण है और भारत का भी कल्याण है। तुम बाबा का फरमान नहीं मानेंगे तो फिर बाबा तुम्हारी बात कैसे सुनेंगे? तुम बाबा की बात मानो, अमृतवेला सुहाला बनाओ तो बाबा भी तुम्हारी बात मानेंगे। तुम जो अर्ज़ करेंगे तो बाप तुम्हारी अर्ज़ पूरी करेंगे। यह एक टेव रखो, अभ्यास रखो बाबा को याद करने की। कब? अमृतवेले। बाबा, हमारी मम्मा को थोड़ी तकलीफ है। हम याद का दान मम्मा को देते हैं कि मम्मा को शफा हो जाए। तुम बच्चों की पुकार बाप सुनते हैं प्रैक्टिकल में। अगर बच्चे अमृतवेले याद करने की यह पक्की-2 टेव डाल लें तो बाप बच्चों की पुकार प्रैक्टिकल में सुनते हैं। न सुनें, ऐसा नहीं हो सकता। माना 65 में ब्रह्मा बाबा चाहते थे कि बच्चे संगठित होकर अमृतवेले याद में बैठें और बाबा को याद करें और याद की पावर मम्मा को भी दें। तो क्या मम्मा को पावर नहीं मिली? या बच्चे बाप की याद में बैठने के अभ्यासी नहीं बने थे? नहीं बने थे। अगर बने होते तो मम्मा जीवित बनी रहती या शरीर छोड़ देती? जीवित बनी रहती। तो बच्चों की पुकार बाप प्रैक्टिकल में तब सुनते हैं जब बच्चे भी बाप को फॉलो करें, बाप की बात को मानें।

तो बाबा को भी याद करना है और मम्मा को भी याद करना है। तरीका क्या है? अमृतवेले बैठ जिस आत्मा को शफा देनी है, जिस आत्मा को मदद देनी है, उस आत्मा को भी याद करना, उसका फीचर भी याद आएगा, उसकी आत्मा स्टार को भी याद करना और साथ-2 में शिवबाबा को भी याद करना। बाबा, मम्मा को शफा दो। अगर ऐसे सभी याद में बैठें तो बाबा कितना सुनेंगे। कुछ-ना-कुछ फायदा हो ज़रूर सकता है। आयु का भी दान दे सकते हैं। जितना बाबा को याद करेंगे उतनी आयु बड़ी होती है; याद नहीं करेंगे तो आयु कम होती जावेगी। याद (न) करने वाले की भी आयु कम होती जावेगी और जिसको मदद देंगे, मदद देने की बात सोच रहे हैं, अगर बाबा को अमृतवेले याद नहीं किया तो उसकी भी आयु कम होती जावेगी। अगर बाबा को अमृतवेले याद करेंगे तो उसकी भी आयु बढ़ेगी जिसको मदद देना चाहते हैं और अपनी भी आयु बढ़ेगी। समझो, कोई का पति ज्ञान में नहीं आता है । तो बाबा को याद करना है। बाबा, हमारा पति ज्ञान की बातों को सुनता नहीं है। आप उनकी बुद्धि को ठीक कर दो। अमृतवेले, सवेरे बाबा की याद में बैठकर ऐसे अंदर से शुद्ध संकल्प उस आत्मा के प्रति चलाओ।

बाबा किसकी बात सुनेगा वह भी समझना है। अभी क्या बताया! बाबा किसकी बात सुनेगा? जो बाबा की बातें सुनेंगे, प्रैक्टिकल जीवन में धारण करेंगे तो बाबा उनकी बात सुनेगा। अगर तुम बच्चे बाबा की बात नहीं मानते, तो बाबा भी तुम्हारी बात, तुम्हारी फरियाद को नहीं सुनेगा। जो सदैव याद करते होंगे उनकी बात बाप ज़रूर मानेंगे। क्या? आज उठे, उमंग-उत्साह में आ गए और कल फिर डब्बा गोल हो गया, नहीं उठे। कभी उठे, कभी नहीं उठे, कभी उठे, उठे तो; लेकिन नींद में झींकने लगे, तो बाप ध्यान नहीं देंगे। कब सुनेंगे? जब तुम रेग्युलर याद में हो जावेंगे तो बाप भी तुम्हारी बात, तुम्हारी फरियाद ज़रूर सुनेंगे। तो बताया बाबा किसकी बात सुनेगा वह भी समझना है। किसकी बात सुनेगा? जो निरंतर याद में रहेंगे उनकी बात (जरुर) सुनेगा और निरंतर याद में नहीं रहेंगे तो बाबा भी उनकी बात नहीं सुनेगा। ऐसे नहीं कि याद तब किया जब कोई काम पड़ा। तब तो मतलबी हो गए। ऐसे नहीं, अमृतवेले याद करने की टेव पड़ जानी चाहिए। बाबा तो सदैव याद करते रहना है। यह प्रैक्टिस पक्की करनी है।

बाबा, हम पवित्र बन औरों को भी पवित्र बनने का पैगाम देना चाहते हैं। हमारा पति मानता नहीं है। इसकी बुद्धि का ताला खोलो। हमारा पति हमको भी पवित्र नहीं रहने देता, खुद भी पवित्र नहीं रहता, तो बाबा इसकी बुद्धि का ताला खोलो; ताकि यह खुद भी पवित्र रहे और हमको भी पवित्र

रहने दे और हम सबको पैगाम देने लायक बन जाएँ। अर्ज़ी हमारी, मर्ज़ी आपकी; क्योंकि बाबा तो जानते हैं-इनकी बुद्धि का ताला खुलना है वा नहीं खुलना है। तो बाबा को याद कर अर्ज़ी की जाती है- बाबा, इनकी बुद्धि का ताला खोलो, नहीं तो आपकी सर्विस में विघ्न डालेंगे, हम जो आपकी सर्विस करना चाहती हैं, आपकी सर्विस यह हमको करने नहीं देंगे। ऐसे-2 बाबा को याद करेंगे तो उनको भी तरस पड़ेगा। किनको? पति को। बाबा जानते हैं यह इस कुल का है अथवा नहीं है। कुल का नहीं होगा तो क्या करेंगे? कोई-2 तो बिल्कुल आते ही नहीं हैं। कोई-2 तो आते हैं तो कुछ प्रजा का पार्ट मिलता है। क्या? जो थोड़ा-2 आते हैं तो प्रजावर्ग में तो आ ही जावेंगे। कोई को अंदर आना ही ना है तो क्या करेंगे! तो युक्तियाँ बतलाते रहते हैं- अपना भी कल्याण करो और दूसरों का भी कल्याण करना चाहिए। ऐसे नहीं कि सारा दिन याद नहीं करेंगे, बाकी जब आफत आएगी तो बाबा को याद करेंगे। तो बाबा यह समझेंगे- ये तो मतलबी हैं, अपना मतलब निकल जाएगा फिर बाबा को याद करने वाले नहीं हैं। इनकी बाबा से सच्ची प्रीति नहीं है। आज मतलब निकल जाएगा, कल ये ठेंगा दिखा देंगे; बाबा को याद नहीं करेंगे। वायब्रेशन की जो पावर-मदद बाबा लेना चाहते हैं बच्चों से, वह ये मदद करने वाले नहीं हैं। तो जब आफत आए तब याद करेंगे- ऐसा नहीं होना चाहिए।

कहा जाता है- मिठरा घुरत घुराय। तुम बाप को प्यार नहीं करेंगे तो वो तुम्हारा क्या सुनेंगे! मिठाई है, चीनी है, दूध में घोली जाती है तो थोड़ा टाइम तो लगता है, धीरे-2 घुल जाती है। तो ऐसे ही तुम प्रैक्टिस करेंगे बाप के साथ संकल्प मिलाकर एक करने की, बाप की याद में बैठकर, बाप की याद में मन्मनाभव होने की प्रैक्टिस करेंगे तो वो प्रैक्टिस पक्की हो सकती है। तुम जानते हो बाप से हम 21 जन्म स्वर्ग का वर्सा लेते हैं। सिवाय बाप के और कोई ऐसे कह नहीं सकता कि मैं ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मणों को समझाता हूँ। यह शिवबाबा का रुद्र ज्ञान यज्ञ है, जिसका ही वर्णन है। बाकी इसमें चरित्र आदि की बात नहीं है। क्या? कोई-2 चरित्र किए। कृष्ण के चरित्र दिखाते हैं ना। कृष्ण तो था ही सतयुग में। कृष्ण कोई द्वापरयुग में नहीं होता कि कृष्ण द्वापरयुग में भगवान बनकर आता है और कलियुगी पापी युग की स्थापना कर देता है। नहीं, 16 कला सम्पूर्ण कृष्ण तो 16 कला सम्पूर्ण युग में ही होता है। 16 कला सम्पूर्ण युग कौन-सा होता है? सतयुग। कृष्ण तो था ही सतयुग में। वहाँ कोई चरित्र आदि होते नहीं हैं। बच्चा पैदा हुआ और नर्स ले जाकर सम्भालती है। तो चरित्र की इसमें बात ही नहीं। तुम जानते हो राधा-कृष्ण होते हैं तो पाठशाला में जाते हैं। इसमें चरित्र की

बात नहीं। चरित्र है तो शिवबाबा का है और शिवबाबा कौन-से युग में आते हैं? कलियुग के अंत और सतयुग के आदि, जिसे संगमयुग कहा जाता है। इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर परमात्मा बाप कृष्ण के अंतिम 84वें जन्म में आते हैं। उस जन्म का नाम क्या होता है? दादा लेखराज ब्रह्मा। जादूगर है ना। चरित्र तो शिवबाबा के हैं। एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति दे देते हैं; लेकिन कब देंगे? मिठरा घुरत घुराय; जैसे चीनी दूध में मिलकर एक हो जाती है, ऐसे तुम्हारे संकल्प बाप के संकल्प में मिलकर एक हो जाएँ, तब तुम बच्चों को वो जीवनमुक्ति दे देते हैं। घर बैठे तुमको साक्षात्कार कराते हैं। गोद में बच्चा देखती है। यह कोई रिद्धि-सिद्धि की बात नहीं है। कृष्ण के जन्म की बात बताई। कृष्ण का जन्म होगा तो दासी आएगी, जन्म लेते ही बच्चे को उठा लेगी। रिद्धि-सिद्धि की इसमें कोई बात नहीं है।

भगवानुवाच-बच्चे, कृष्ण की आत्मा का बाप भी तो कोई है ना। कृष्ण का शरीर भी होगा तो शरीर का बाप भी होगा। आत्मा का तो बाप सबका एक ही है- सुप्रीम सोल ज्योतिबिंदु शिव; लेकिन (सतयुगी कृष्ण के) शरीर को जन्म देने वाला भी कोई बाप है। (प्रजा) पिता है ना। कौन? जो कृष्ण सोल का बाप है या 500/700 करोड़ मनुष्यात्माओं का बाप है, वो कौन है? परमपिता, सबका पिता। माना जो सारी मनुष्य सृष्टि का पिता है- प्रजापिता, आदम। मुसलमान क्या कहते हैं? आदम। क्रिश्चियन क्या कहते हैं? एडम। उस एडम, आदम, प्रजापिता या आदिदेव का जो पिता है, वो है परमपिता। वो ही बाप पतित-पावन है। यह नहीं कहा कि यही बाप पतित-पावन है। ब्रह्मा के तन से बोल रहा है; लेकिन यह क्यों नहीं कहा (कि) <u>यही</u> बाप पतित-पावन है? क्या कहा? <u>वो</u> ही बाप पतित-पावन है। ऐसे क्यों कहा? 65 में इशारा दिया कि वो पार्ट आगे चलकर प्रत्यक्ष होने वाला है, जिस आदम में, एडम में, प्रजापिता या आदिदेव में वो सुप्रीम सोल बाप प्रवेश करके यह ज्ञान सुनाता है और ज्ञान सुनाकर पतितों को पावन बनाता है।

तुम जानते हो हम पावन दुनियाँ का मालिक बनने बाप के पास आए हैं। पावन दुनियाँ है सतयुग। आज की दुनियाँ है झूठखंड, कलियुग, कलह-कलेश का युग। तो कलह-कलेश के झूठखंड से निकलकर सचखंड या सतयुग में जाने के लिए हम बाप के पास आए हैं। ऐसे बाप की श्रीमत पर कदम-2 पर चलना चाहिए। क्या? सतयुग में तो जाने के लिए आए हैं; लेकिन आने से ही काम नहीं चलेगा। क्या करना है? जो भी हम काम करें, जो भी हम काम करने के लिए कदम उठाएँ, उस हर कदम में हम बाप की श्रीमत ज़रूर लें। माया <u>ग्राह</u> ऐसा है जो चलते-2 अच्छे-2

महारथी, जो सेंटर खोलते हैं, गीता-पाठशालाएँ खोलते हैं, बाप को मदद करते हैं, उनको भी माया ग्राह बन करके हप कर लेती है। पूरा ही माया हप कर लेती है। सारा पुरुषार्थ ठंडा कर देती है। कैसे महारथी बताए? अच्छे-2 महारथी। कैसे अच्छे-2 महारथी? जो अपना तन, धन, धाम, सुहृद, परिवार सबकी बाज़ी लगाय देते हैं। ऐसे अच्छे-2 महारथी अपने बीवी, बाल-बच्चों को भी यज्ञ में अर्पण कर देते हैं। फिर क्या होता है? माया ग्राह उनके भी बुद्धि रूपी पाँव को ऐसा पकड़कर बैठ जाती है कि उनका सारा पुरुषार्थ चौपट कर देती है। ऐसे अच्छे-2 महारथी जो सेंटर खोलते हैं, मदद करते हैं, उनको भी हप कर लेती है।

कहाँ भी थोड़ा अहंकार आया, श्रीमत पर न चला तो माया हप कर लेती है। फिर तो तरस पड़ता है। तो बाप को याद करके कहा जाता है- बाबा, कुछ इनकी बुद्धि का ताला खोलो। बाबा से अर्ज़ की जाती है कि बाबा, इनकी बुद्धि का ताला खोलो। बाप कहते हैं इनको तो माया ने बिल्कुल खा लिया है। ये तो पाँचवीं मंज़िल से नीचे गिर गए। कोई उल्टा अहंकार आ गया तो माया एकदम हप कर लेती है। फिर बुद्धि का ताला बंद हो जाता है। माया भी बड़ी हणखण है। ऐसे बाप को तो बहुत याद करना है, प्यार करना है। एक घड़ी, आधी घड़ी... याद ज़रूर करना चाहिए। याद में ही फायदा है। याद करेंगे तो तुम्हारा भी कल्याण हो जावेगा। मेरी याद से तुम अपना कल्याण करते हो। भल दूसरों के लिए तुम याद करने बैठते हो, दूसरों को शफा देने के लिए याद में बैठते हो, दूसरी आत्माओं को मदद करने के लिए भी बैठते हो तो भी तुम्हारा अपना कल्याण होता ही है। अच्छा बच्चा होगा तो बाबा सुनेगा भी। कैसा बच्चा होगा? अच्छा बच्चा होगा तो बाबा सुनेगा और अहंकार में आने वाला होगा तो बाबा नहीं (सुनेगा)। अहंकार किसको आता है- आत्माभिमानी को, देहअभिमानी को? देहअभिमानी को। बहुत बच्चियाँ कहती हैं- बाबा, योग में बैठ रोज़ बाबा को कहते थे, इनका ताला ढीला करो। सो बाबा बरोबर ताला ढीला हुआ है। बाबा को कोई बच्ची याद आ गई। जिन बच्चियों ने अंदर से बाबा को बहुत याद किया कि बाबा, इनकी बुद्धि का ताला खोलो। तो बाबा ने ताला खोल दिया। बरोबर इनकी बुद्धि का ताला थोड़ा ढीला हुआ है, कुछ ज्ञान सुनने लग पड़ा है। ताला ढीला हुआ तो बाबा की ज्ञान की बातें सुनने लग पड़ा है।

मोस्ट बिलवेड बाप को बहुत प्यार से याद करना है। कहते हैं आधा कल्प तुम ब्राह्मणों ने भक्तिमार्ग में याद किया है। 84 जन्म लेने वालों को ही बाप बहुत जन्मों के अंत में मिलेगा। बहुत जन्मों के अंत में किसको मिलेगा- जो 83 जन्म लेने वाले होंगे, भले सतयुग से आवेंगे सेकेंड

नारायण के राज्य में, उनको बाप नहीं मिलता है- जो पूरे 84 जन्म लेने वाले होंगे, सूर्यवंशी होंगे। चारों युगों में से जो पहला जन्म है, उस जन्म से ही जिन्होंने जन्म लेना शुरू किया, जिनके पूरे 84 जन्म होते हैं, 5000 वर्ष की सृष्टि रूपी कल्प में पूरा चक्कर लगाने वाले, उन बच्चों को मैं मिलता हूँ। सूर्यवंशी ही पूरे 84 जन्म लेते हैं। जो चंद्रवंशी होंगे वो भी पूरे 84 जन्म नहीं लेते हैं। एक तो ज्ञानसूर्य का पार्ट और दूसरा ज्ञान चंद्रमा का पार्ट। ज्ञान चंद्रमा कौन? दादा लेखराज ब्रह्मा। दादा लेखराज ब्रह्मा ने तो शरीर छोड़ दिया। तो अभी कौन? जगदम्बा, जिसके द्वारा स्वर्ग के गेट खुलने हैं। तो जगदम्बा के वंश के भी होंगे; क्योंकि जगदम्बा में ही दादा लेखराज ब्रह्मा प्रवेश करके पार्ट बजाता है। स्वर्ग का गेट तो ब्रह्मा के द्वारा खुलता है ना। तो पार्ट तो बजाता है; लेकिन ब्रह्मा की मत पर जो चलते हैं, वे चंद्रवंशी और ज्ञान-सूर्य शिव की मत पर (जो) चलते हैं, वे सूर्यवंशी। फिर उसके बाद दूसरे-2 वंश भी आते हैं। इस्लामवंश (का) भी कोई मुखिया होगा, बौद्धवंश का भी कोई मुखिया होगा, क्रिश्चियनवंश का भी कोई मुखिया होगा। तो बाप कहते हैं सूर्यवंशी ही पूरे 84 जन्म लेते हैं। चंद्रवंशी भी पूरे 84 जन्म नहीं लेते।

बाप कहते हैं-बहुत जन्मों के अंत में आए मैं <u>इनमें</u> प्रवेश करता हूँ। बहुत जन्मों के अंत में आकर, बहुत जन्म कितने हुए? 84, और 84वें जन्म का भी जो अंत का समय है मैं उसमें आकर इसमें प्रवेश करता हूँ। 84 लाख जन्मों की तो बात ही नहीं है। सिर्फ कितने जन्मों की बात है? 84 जन्मों की बात है। तुम्हारी बुद्धि में बीज और झाड़ का सारा राज़ है। इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का बीज कौन है, वह भी तुम्हें पता है और इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का विस्तार क्या है, कौन-2 से धर्म इसमें समाए हुए हैं, वह भी तुम्हारी बुद्धि में बैठा हुआ है। बरोबर इनका फाउण्डेशन बाबा ही है। <u>इ</u>स झाड़ का फाउण्डेशन बाबा ही है। यह नहीं कहा- बाप है। शिव बाप फाउण्डेशन नहीं है। जो बाबा है, जिसे शिवबाबा कहा जाता है; शिव बाप में और शिवबाबा में क्या अंतर है? शिव बाप ज्योतिबिंदु निराकार का नाम है। उसकी बिंदी का ही नाम 'शिव' है और जब वो शिव साकार में प्रवेश करता है, इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का जो बीज है उसमें प्रवेश करता है तो उसका नाम पड़ता है- 'शिवबाबा'। माने साकार और निराकार दोनों का मेल बाबा कहा जाता है। पहले-2 फाउण्डेशन है देवी-देवता धर्म का। इनकी आयु पूरी 5000 वर्ष है। किनकी? देवी-देवता सनातन धर्म का जो हेड है। कौन है? ल.ना.। कौन-से ल.ना.? सतयुग के या डायरैक्ट नर से नारायण बनने वाले? सतयुग के जो ल.ना. बनेंगे वो पहले नर से कृष्ण प्रिंस बनेंगे, राधा प्रिंसेज़ बनेगी, फिर बड़े

होकर ल.ना. बनेंगे; लेकिन उनकी बात नहीं कर रहे हैं। वो कौन-से वंश के हो गए? वो भी सूर्यवंशी हुए; लेकिन उसके बाद जो आएँगे वो पूरे 84 जन्म लेने वाले नहीं होंगे। तो पहले-2 उनमें भी दो फाउण्डेशन हैं। जो पहला-2 फाउंडेशन है वो देवी-देवता धर्म का है। इनकी आयु पूरी 5000 वर्ष है। राधा-कृष्ण की आयु पूरी 5000 वर्ष नहीं होगी और इनकी आयु पूरी 5000 वर्ष है। सारे झाड़ की आयु कितनी है? मनुष्य सृष्टि रूपी जो कल्पवृक्ष है उसकी आयु कितनी है? 5000 वर्ष। तो 5000 वर्ष का जो झाड़ है उसका बीज कितना पुराना हुआ? 5000 साल पुराना हुआ। जड़ें बाद में निकलेंगी, तना बाद में निकलेगा, टालियाँ बाद में निकलेंगी, फल-फूल बाद में निकलेंगे। तो बोला- इनकी आयु पूरी 5000 वर्ष है।

बाप बहुत अच्छी रीति सब कुछ समझाते रहते हैं। सबको यह परिचय देना है- परमपिता-परमात्मा आपका बाप है। उनसे तो वर्सा लेना चाहिए। बाप है तो बाप से क्या मिलता है बच्चों को? वर्सा मिलता है। प्रॉपर्टी का वर्सा मिलता है ना। लौकिक बाप से लौकिक प्रॉपर्टी का वर्सा मिलता है, अल्पकाल का एक जन्म का वर्सा मिलता है, वह भी किसी को थोड़ा, किसी को ज़्यादा और यहाँ सुप्रीम सोल बाप जो है, जो बेहद का बाप है, वो बेहद का वर्सा देता है, अनेक जन्मों की सुख-शांति का वर्सा देता है। भारत ऐसा था। उनको ज़रूर वर्सा लेना चाहिए। अभी माया से भारत ने हार खाई है तो कंगाल बन पड़ा है। माया कौन-सी है? 10 शीश वाला रावण ही माया का रूप है जो अनेक मतें देने वाला है। उसमें 11वाँ गधे का सिर भी दिखाया जाता है। रावण को 10 सिर दिखाए जाते हैं, उसके साथ-2 ऊपर एक गधे का शीश भी दिखाया जाता है। वो सबका हेड है, दसों का। तो ये सब मिलकर अपनी मत देने वाले रावण कहे जाते हैं। तुम्हारा यह बहुत कड़ा दुश्मन है। इनको तुम जलाते ही आए हो। और कोई का तो ऐसे नहीं होता है, जिनको तुम हमेशा जलाते आए। मरा, जाय जन्म लिया। कोई भी मरता है तो जाकर दूसरा जन्म लेता है, नाम-रूप बदल जाता है। इनको तो तुम जलाते हो फिर बड़ा हो जाता है। तुम जलाते हो फिर इनका नाम बदलता नहीं। कोई मरता है तो अगले जन्म में उसका नाम-रूप बदल जाता है। तुम रावण को हर वर्ष जलाते हो और हर वर्ष बड़ा होता जाता है और उसका नाम-रूप भी बदलता नहीं है। आधा कल्प का दुश्मन चला आता है। इसने आधा कल्प तुमको दुर्गति में पहुँचाया है। किसने? 10 सिर वाले माया रावण ने, जो 10 प्रकार की, बीसियों तरह की मत देने वाला है। राम बाप है एक और रावण के सिर हैं अनेक।

गाते हैं-हमारे में 5 भूत हैं। आप सर्वगुण सम्पन्न हो; हम पापी हैं, नीच हैं। संन्यासी इन बातों को नहीं जानते। बाप समझाते हैं, अब मैं आया हुआ हूँ पतितों को पावन बनाने के लिए। किनको पावन बनाने के लिए आया हूँ? जो पतित बन चुके हैं, अपने को पतित समझते हैं, मैं उनको पावन बनाने के लिए आया हुआ हूँ। बड़े-2 संन्यासी, धुरंधर, पंडित, विद्वान, आचार्य अपने को पतित नहीं समझते हैं। तो मैं उनके लिए नहीं आया हूँ। वो पहले पतित से पावन नहीं बनेंगे। वो पूरे 84 जन्म लेने वाली पक्की आत्मा की स्टेज में रहने वाले नहीं बनते। तुम पतितों को मैं पूरा 16 कला सम्पूर्ण पावन बनाने के लिए आया हुआ हूँ। मुक्तिधाम में कोई पतित रह ना सके। माँगते भी हैं नई दुनियाँ, नया रामराज्य हो। परंतु वो था हद का बापू जी, जो कहता था कि रामराज्य हो। वो हद का बापू जी था और यह बेहद का बापू जी आया हुआ है। हद का बापू जी क्यों कहा? जो 40 करोड़ मनुष्यात्माएँ भारत में उस समय थीं, वो उसको अपना बापूजी मानती थीं; सारी दुनियाँ के सब धर्म के लोग उनको अपना बापूजी नहीं मानते थे; और यह अभी कौन आया हुआ है? सारी मनुष्य सृष्टि का बाप। जो धर्मपिताएँ हैं- इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट, उन बापों का भी यह बाप आया हुआ है। वो था हद का बापूजी गाँधी जी और यह है बेहद का बापूजी। ब्राह्मणों की दुनियाँ में बापूजी कौन था? ब्राह्मणों की दुनियाँ में ब्रह्माकुमार-कुमारी किसको बापूजी समझते हैं? दादा लेखराज ब्रह्मा को बापूजी समझते हैं। वो भी समझते थे कि रामराज्य आएगा। मैं जन्म लूँगा कृष्ण के रूप में; लेकिन रामराज्य तो आया नहीं। तो ज़रूर रुद्र ज्ञान यज्ञ रचना पड़े, जिससे रावण-राज्य का विनाश हो। सारी दुनियाँ में जो रावण (का प्रजातंत्र) राज्य फैला हुआ है उसका रुद्र ज्ञान यज्ञ में विनाश होता है। वो तो इन बातों को नहीं जानते।

<u>आधाकल्प</u> तुम बाप को भूलते हो, इसलिए विकर्म बनते हैं। इस समय तुम 100 परसेंट पतित-तमोप्रधान बन पड़े हो। फिर 100 परसेंट पावन बनना है। पूरा पुरुषार्थ करना है बाप से वर्सा लेने का। जानते हो, मम्मा-बाबा अव्वल नम्बर में जाते हैं, तो क्यों ना हम उन्हों को फॉलो करें। मम्मा-बाबा जब अव्वल नम्बर में जाते हैं तो हम भी क्या करें? हम भी अव्वल नम्बर में जाने का पुरुषार्थ करें। ब्रह्माकुमार-कुमारी क्या कहते हैं कि यह कैसे हो सकता है? मम्मा-बाबा, दादा लेखराज और ओमराधे से ज़्यादा ऊँचा पुरुषार्थ कोई कर सकता (है) और बाबा क्या कहते हैं कि क्या संकल्प करो, तुम जानते हो कि मम्मा-बाबा अव्वल नम्बर में जाते हैं तो क्यों न हम उन्हों को फॉलो करें। मम्मा-बाबा 16 कला सम्पूर्ण देवी-देवता बन सकते हैं तो हम क्यों नहीं बन सकते?

हम भी ज़रूर बन सकते हैं। उन जैसी सर्विस करें तो हम भी तख़्तनशीन बनें। तो फिर कल्प-2 ऐसा पुरुषार्थ चलेगा। बाबा सब बातें अच्छी रीति समझाते हैं।

यहाँ तुम कुछ देते नहीं हो। ऐसे अहंकार में नहीं आना कि हम कमाई कमाकर कुछ बाबा को देते हैं तो उससे बाबा स्वर्ग स्थापन करेगा। नहीं, तुम कुछ देते नहीं हो, तुम अपने लिए लेते हो। तुम जो कुछ देते हो, बाबा की बैंक में जमा हो जाता है। बाबा उसको मल्टीप्लाई करके ब्याज सहित वापस कर देगा। तुम्हारा जो कुछ कखपन है सब शिवबाबा को दे दो। क्या? तुम्हारे पास तन, मन, धन आदि जो भी टटपुँजिया हैं वो सब बाबा को दे दो। बाबा, ये सब आपका है। फिर बाबा कहते हैं- अच्छा बच्चे, तुम ट्रस्टी होकर सम्भालो। ये घर-घाट तुम ट्रस्टी होकर सम्भालो। गीता-पाठशाला खोलकर जैसे मैं चलाऊँ वैसे चलो। कदम-2 पर बाप से श्रीमत लेकर चलो। ऐसे नहीं, रावण आया और उसके मुख ने आकर कोई बात कान में डाल दी और तुमने उसकी बात को फॉलो करना शुरू कर दिया। तो क्या होगा? माया रावण खा जाएगा, माया ग्राह हप कर जावेगी।

तो ट्रस्टी होकर सम्भालो। तुम ट्रस्टी हो सम्भालते हो तो गोया तुम शिवबाबा के भंडारे से ब्रह्मा भोजन खाते हो। क्या? ऐसे ट्रस्टी होकर चलते रहोगे, बाबा से कदम-2 पर राय लेकर चलते रहोगे तो तुम ऐसे समझो कि जैसे तुम बाबा के ही भंडारे से खाते हो। जैसे यहाँ आते हो तो शिवबाबा के भंडारे से खाते हो। बाबा के घर में मधुबन में आते हो तो समझते हो ना-हम कहाँ खाते हैं? बाबा के भंडारे से खाते हैं। सिर्फ ट्रस्टी होकर रहना है। अपने घर में भी गीता-पाठशाला खोलकर बैठे हो तो क्या समझना है? कि हम ट्रस्टी हैं। ये सब किसका है? बाबा का है। कहते भी हैं- बाबा, यह सब आपका है। तो तुम ट्रस्टी होकर रहो। हम तुम्हारा यह क्या करेंगे? तुमको इस धन से पाप नहीं करने देंगे। क्या कहा? तुम्हारे पास जो कुछ भी है, हम उससे तुमको पाप नहीं करने देंगे। मनुष्य दान-पुण्य करते हैं। अगर पात्र को नहीं दिया तो उसने जाकर शराब आदि पी लिया, गंदा काम किया तो देने वाले के ऊपर भी उसका पाप चढ़ जावेगा। पापात्मा को दान करने से पापात्मा बन पड़ेंगे। अभी पुण्यात्मा बनने के लिए बाप को याद करो। बाबा, यह सब कुछ आपका है।

शिवबाबा तो दाता है। इसमें प्रवेश हो कर्तव्य कराते हैं। यहाँ तो कोई महल आदि नहीं बनाना है। क्या डायरैक्शन दिया? कि अब यह दुनियाँ जाने वाली है। ये सब महल-माड़ियाँ-अटारियाँ जो देख रहे हैं वो सब खलास होने वाले हैं। तो अब यहाँ कोई महल-माड़ियाँ नहीं बनाने

हैं। सभी का मौत सामने खड़ा है। लड़ाई में छोटे-2 राजाएँ बड़े-2 राजाओं के पास रखते हैं तो उनका सेफ हो जाता है; क्योंकि उन्हों के पास तो बहुत रहता है। तो अब बाप कहते हैं- अभी सबका मौत है। तुम्हारे पास जो भी कखपन है वो सब बाबा के पास सुरक्षित कर दो। सबका मौत है। तुम अभी किसके पास रखेंगे? वहाँ तो बड़े-2 राजाएँ होते थे तो छोटे-2 राजाएँ जाकर अपना तन, धन, धाम, सुहृद, परिवार सब उनको सौंप देते थे और लड़ाई में चले जाते थे। यहाँ तो बहुत बड़ी लड़ाई होने वाली है। तुम किसके पास रखेंगे? बाबा ने पूछा। तो बताओ, किसके पास रखेंगे? बाबा के ही पास रखेंगे और क्या करेंगे? बाबा के पास रखेंगे या (विनाश में) नष्ट हो जाने देंगे? क्या करेंगे? जो भी तन, धन, धाम, सुहृद, परिवार, बीवी, बाल-बच्चे, जो कुछ भी है, उनको नष्ट हो जाने देंगे या बाबा के पास सुरक्षित करके रखेंगे? बाप के पास सुरक्षित करके रखेंगे और क्या करेंगे? माना नष्ट थोड़े ही कर देंगे। बाप को हिसाब-किताब दे फिर राय पर चलते रहो; नहीं तो पाप बन जावेगा। क्या कहा? जब एक बार संकल्प किया-बाबा, ये सब आपका है या मुख से कहा- बाबा, ये सब आपका है, फिर बाद में अगर उससे कोई उल्टा कर्म कर लिया, चाहे अपने तन से, चाहे धन से, तो क्या होगा? तो पाप बन जावेगा, सौ गुना पाप चढ़ जावेगा।

भक्तिमार्ग में भी ईश्वर (को) अर्पण करते हैं तो दूसरे जन्म में कुछ -ना-कुछ मिल जाता है ना। अभी तो डायरैक्ट बाप आया हुआ है। भक्तिमार्ग में एक जन्म करते हैं तो अगले जन्म में मिल जाता है। कोई बहुत दान-पुण्य करते हैं, सब कुछ विश्व-कल्याण में लगाते हैं, ईश्वर (को) अर्पण करते हैं तो अगले जन्म में कोई राजा बन जाते हैं; इस जन्म में कोई बहुत बड़ी धर्मशाला बनाई तो अगले जन्म में उनको महल-माड़ियाँ मिल जाती हैं; इस जन्म में कोई हॉस्पिटल बनाया तो अगले जन्म में उनको बहुत अच्छा, स्वस्थ, सुंदर शरीर मिल जाता है। वहाँ तो बाप नहीं होता, तो भी भक्तिमार्ग में भक्ति का भाड़ा अगले जन्म के लिए मिल जाता है और यहाँ तो बाप डायरैक्ट आया हुआ है। तुम जानते हो हम भविष्य 21 जन्म के लिए बाप से वर्सा ले रहे हैं। डायरैक्ट करने से 21 जन्म की पक्की प्राप्ति होती है और भक्तिमार्ग में एक जन्म करते हैं गुरुओं की मत पर तो अगले जन्म के लिए मिलता है, सिर्फ एक जन्म के लिए। यह शूटिंग यहाँ भी होती है। यहाँ ब्राह्मणों की दुनियाँ में भी गुरुघंटाल बैठे हुए हैं। अगर उन गुरुघंटालों के द्वारा करते हैं तो एक जन्म की प्राप्ति होगी, अगर डायरैक्ट बाबा को करते हैं तो 21 जन्म की प्राप्ति होती है।

तुम जानते हो हम भविष्य 21 जन्म के लिए बाप से वर्सा ले रहे हैं। तो ये सीधी बात है। बाप भी कहते हैं यह सब तुम बच्चों का है। देखो मकान भी तुम्हारे लिए बना है। बाबा जो भी मकान बना रहे हैं किसके लिए बना रहे हैं? अरे! बच्चों के लिए बना रहे हैं कि दुनियाँ के लिए बना रहे हैं? बच्चों के लिए बना रहे हैं। चाहे माउण्ट आबू में बना रहे हैं, चाहे मिनी मधुबनों में बना रहे हैं, किसके लिए? बच्चों के लिए बनाय रहे हैं। तुमने ही बनाया है। मकान भी जो बनाय रहे हैं वो भी बनाया किसने? कोई बिदी आकर बनाएगी क्या? तुमने ही बनाया है। तो कोई को बल देने के लिए सवेरे उठ बाप को याद करना चाहिए- बाबा, इनकी बुद्धि को ठीक कर दो। ये है बाप को याद करने की युक्ति। बाबा फिर कहेंगे- अच्छा, तुम सब बच्चे याद का दान दो। मुझे भी याद करो, उनको भी याद करो, तो इससे भी उनका कल्याण हो सकता है। क्या करो? जिसको मदद देनी है उसको भी याद करो और साथ-2 मेरे को भी याद करो। तो जिसको मदद दे रहे हो याद में बैठकर, उसको मदद मिल जावेगी। बाबा, आप इनकी आयु को बढ़ाओ।

तुम जानते हो योग से तुम्हारी आयु बढ़ती जावेगी। तुम्हारी प्यारी माँ है, तो जितना हो सके शिवबाबा को याद करो। बाबा तो कल्याणकारी है और समर्थ है। अभी ही तुम बच्चों की सुनते हैं। 84 जन्मों में बाप आकर तुम्हारी बात नहीं सुनेंगे। अभी संगमयुग में तुम्हारी पुकार सुनते हैं। सवेरे उठ याद करो। बैठकर याद करना अच्छा है। (नहीं) तो फिर लेटे-2 याद करना शुरू कर दो! क्या करो? अमृतवेले बैठकर याद करो- बाबा, आप कितने मीठे हो, कितने प्यारे हो। बाबा, आपने तो हमारा <u>बेडा</u> पार किया है। क्या पार किया है? बेड़ा। कौन-सा बेड़ा? यह शरीर ही हमारा जहाज है। यह शरीर रूपी जहाज जो विषय-वैतरणी नदी में पड़ा हुआ है, इस विषय-वैतरणी नदी से पार निकालकर बाप ले जाने के लिए आया हुआ है। याद से ही विकर्म विनाश होते हैं। सवेरे का टाइम तो बहुत अच्छा है, सबको मिलता है। ऐसे बाप को याद किया तो वर्सा तुम्हारा है ही। जानते हो बाबा से स्वर्ग का वर्सा मिलता है। तो बाबा को याद कर कहना होता है- बाबा, हमारी स्त्री सुनती नहीं है। हम उनको भी साथ ले जाना चाहते हैं। <u>उनकी</u> बुद्धि को खोलो। तुम बाप को जानते हो तो मदद तुमको मिल सकती है। बाकी जो जानते ही नहीं हैं, माँगेंगे भी कैसे? दुनियाँ में और कोई नहीं जानते हैं। सच्ची दिल पर साहब राज़ी होते हैं। सच्चे साहब साथ बच्चों की दिल तो पूरी होनी चाहिए ना। इसलिए कहते हैं बाबा को सवेरे बैठ याद करो एकांत में तो बाबा अच्छी रीति सुनेंगे। उस समय वायुमंडल भी अच्छा होता है। श्रीमत पर चलने से तुम ऐसे श्रेष्ठ बनेंगे।

बाप का बच्चों पर कितना प्यार रहता है। पलकों पर बिठाय सीधा ले जाते हैं। सीधा कहाँ ले जाते हैं? परमधाम। कहाँ बिठाय? (किसी ने कहा-पलकों पर) पलकों पर कैसे बिठाया जाएगा? हमारा शरीर तो इतना बड़ा है! तो शरीर को तो परमधाम में ले जाने की बात ही नहीं। किस को ले जाते हैं? आत्मा को; लेकिन देहभान होने के कारण आत्मा तो ऊँची स्टेज में उड़ती ही नहीं। तो बाप कहते हैं तुम अपनी ताकत से नहीं उड़ते हो तो मैं तुम बच्चों को दृष्टियोग से ऊपर उठाकर ले जाऊँगा माना तुम बच्चों को पलकों पर बैठाकर ले जाऊँगा। पलकों के ऊपर बैठाय सी धा ले जाते हैं। तो ऐसे बाप की मत पर चलना चाहिए, जो पलकों पर बैठाकर तुमको ले जाते हैं। बाबा तुमको ऐसे तो नहीं कहते हैं कि हम बूढ़ा हो जाऊँगा। बाबा यह कहते हैं कि हम बूढ़ा हो जाऊँगा? बाबा तो कहते हैं- मैं तो कभी बूढ़ा होता नहीं हूँ। बाबा ऐसे नहीं कहते हैं- हम बूढ़ा हो जाऊँगा फिर तुम हमारी सम्भाल करना। मैं तुम्हारे अधीन बनने वाला नहीं हूँ। मैं तो तुमको पलकों पर बैठाकर अपने साथ ले जाऊँगा। तुम्हें हमारी सम्भाल करने की दरकार नहीं है। वो तो लौकिक बाप होते हैं जो इच्छा करते हैं कि हमारा बच्चा बड़ा हो जाए, हम बूढ़े हो जाएँ तो हमारी परवरिश करे। बाप कहते हैं मैं तो शरीरधारी नहीं हूँ। अभी तुम हमारे क्या पाँव दबाओगे! बच्चे सन्मुख आते हैं तो अच्छी रीति खुशी होती है। किसको? बाप को।

मधुबन में मुरली बाजे। मधुबन की कितनी महिमा है! बाबा से कोई बेमुख हो जाते हैं तो फिर बाबा बुद्धि का ताला एकदम बंद कर देते हैं। किनका ताला बंद होता है? जो बाबा के सन्मुख होने के बजाय विमुख हो जाते हैं। विमुख कौन बनाता है? माया रावण विमुख बनाता है। कोई-न-कोई आकर, रावण का कोई सिर आकर हमारे कान में ऐसी फूँक मारता है कि हमको उल्टी मत पर चलाय देता है, तो हमारी बुद्धि का ताला बंद हो जाता है। मधुबन की कितनी महिमा है! एक अक्षर भी मुख से बोल ना सकेंगे, एकदम ताला बंद हो जावेगा। जब उल्टी चलन चलने लग पड़ते हैं तो ज्ञान किसी को सुनाय नहीं सकते। मान लो किसी ने ज्ञान में चलने के बाद शादी किया तो एक अक्षर भी मुख से निकल नहीं सकेगा। बाबा शादी की परिभाषा क्या बताते हैं? मालूम है? (किसी ने कुछ कहा) नहीं, शादी बरबादी तो है, वह तो रिज़ल्ट बताया कि शादी का रिज़ल्ट होगा बरबादी; लेकिन शादी की परिभाषा/डेफिनिशन क्या बताते हैं? शादी किसे कहा जाता है? बाबा ने यह नहीं कहा- ढोल-मंजीरा बजाने को शादी कहा जाता है। किसी के साथ विकार में गए माना शादी किया। विकार में जाना माना शादी। तो शादी किया तो एक अक्षर भी मुख से निकल नहीं सकेगा।

जो भी निकलेगा, दूसरों का अकल्याण ही करेंगे। जो भी मुख से बात निकालेंगे, खुद भी गड्ढे में गिरेंगे और दूसरों को भी गड्ढे में (गिराएँगे)। जो जैसा होता है वैसा ही दूसरों को भी बनाता है। ऐसे नहीं कि ब्राह्मणी के मतभेद से पढ़ाई छोड़ देनी है वा मुरली सुनना बंद कर देना चाहिए। नहीं, मुरली नहीं सुनेंगे तो फिर बाकी क्या रहा? माना पहला पुरुषार्थ क्या है? बाबा की मुरली को रोज़ सुनते रहना है। मुरली नहीं सुनेंगे तो बाकी कुछ भी नहीं रहा! गाते हैं ना-मुरली तेरी में जादू। यह खुदाई जादू है। किसमें? बाबा की मुरली में (जादू)। सारी दुनियाँ बिल्कुल भूल जाती है। ये ईश्वरीय खुदाई जादू ठहरा। अब तो बाप के पास जाना है। फिर हम स्वर्ग के मालिक बनेंगे। इस दुनियाँ का सब कुछ भूल जाते हैं। शरीर भी भूल जाते हैं। अच्छा, बापदादा का सिकीलधे बच्चों को यादप्यार, गुडमॉर्निंग। ओमशांति।

ॐ शांति

Contact Us

Address

A-351-352, Vijayvihar, Phase-1, Rithala, Delhi- 110085

Mobile - 9891370007, 9311161007

Email - a11spiritual1@gmail.com

Website – WWW.PBKS.INFO/ADHYATMIK-VIDYALAYA.COM

Youtube – ADHYATMIK-VIDYALAYA OR AIVV

@A1SPIRITUALUNIVERSITY

Twitter - @adhyatmikaivv

Instagram - @adhyatmikvidyalaya

Linkedin – linkedin.com/company/adhyatmik-vidyalaya